Scheme & Syllabi

of

Diploma Course in Vedic Studies

(Two Semesters)

To run the programme jointly by Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar, and the Central University of Himachal Pradesh, H.P., under the MoU signed between the two universities on 28/02/2024.

Department of Vedic Studies

Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya Sagar (M.P.)

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar M.P.

अधिष्ठाता/DEAN
[illegible] एवं भौतिक विज्ञान अध्ययनशाला
School of Mathematical & Physical Science
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar

Joint Academic Programme by Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya, Sagar and Central University of Himanchal Pradesh, under the MoU Signed dated 28/02/2024

1. Title: One Year Diploma in Vedic Studies

Department of Vedic Studies proposes a one year Diploma in Vedic Studies under the New Education Policy (NEP-2020) which will run jointly by the Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya, Sagar, and Central University of Himanchal Pradesh.

2. Course Objectives:-

1. To explore the hidden knowledge in Vedas and Indian Ancient Knowledge & culture.
2. To perform a critical and comparative analysis about Vedic mathematics and its application.
3. To prepare trained persons with in depth knowledge of Ancient Indian culture and traditions.
4. To develop eco-system which can protect and preserve and carry forward the rich Indian Ancient knowledge tradition related to Vedic studies.

3. Learning outcomes:-

After completing this course students shall be capable in the following:

1. Aware about ancient Indian mathematics.
2. Aware about Vedic Literature and Vedang literature.
3. Knowledge of Vedic Scientific Literature.
4. Acquaint with Ancient healthcare system like Ayurveda, Homeopathy and other disciplines.

4. Course Duration

Proposed program will be of one years (2-semester program) and will be functional as per NEP-2020 regulations as laid down in the university ordinance of both universities.

5. Intake Capacity

There shall be a maximum of 20 students' intake, 10 from each university.

6. Reservation Policy

The maximum intake shall be divided into UR, EWS, OBC, SC, ST and PWD categories as per university/ government of India norms applicable to other graduate academic programs.

7. Eligibility

Passed 10+2 with any discipline.

8. Admission Procedure

1. There shall be an advertisement of this course in newspapers of both the states (M.P. and Himachal Pradesh) and the same shall be displayed on both the university websites.

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

2. The other criterion of admission shall be determined by the M.O.U. signed by both the institutions and joint committee (if any) formed.

9. Award of degree

On successful completion	Semester	Name
One year	Two	Diploma

The course will run under the University Ordinance of both the universities as per NEP-2020.

Fee Structure (For first semester)

S. No.	Heads	Fee
1.	Tuition fee	900
2.	Library fee	250
3.	Sports fee	100
4.	Student Activity fee	100
5.	Medical fee	125
6.	Insurance premium	30
7.	Registration fee	150
8.	IT fee	550
	Total	**2205**
9.	Caution money	250
	Total fee for first semester	**2455/- INR**
	Total fee for second semester onwards	**2205/- INR**

- No practical fee shall be chargeable. Semester fee should be paid at the beginning of the semester. The fee structure of Central University of H.P. may differ if so required.

10. Admission:

It will be through advertisement on website and newspaper with counselling and registration on Samarth Portal at the end of both the Universities.

11. Examination:

The exam will be in accordance with ordinances of respective universities.

12. Exit

After completion of six months, if student leaves the course then certificate in Vedic Studies will be provided.

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Course Scheme

Semester I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
SUHP-DSM-131	वैदिक साहित्य का परिचय I	4	0	0	4	20	20	60	100
SUHP-DSM-132	वैदिक गणित	4	0	0	4	20	20	60	100
SUHP-DSM-133	भारतीय आयुर्वेद	4	0	0	4	20	20	60	100
SUHP-MDM-131	वैदिक विज्ञान	4	0	-	4	20	20	60	100
SUHP-AEC-131	भारतीय खगोल विज्ञान	4	0	-	4	20	20	60	100

ME – Mid Exam, IA- Internal Assessment, ESE- End Sem. Exam

Semester II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
SUHP -DSM-231	वैदिक साहित्य का परिचय II	4	0	-	4	20	20	60	100
SUHP -DSM-232	प्राचीन भारतीय गणित	4	0	-	4	20	20	60	100
SUHP -DSM-233	भारतीय संख्या प्रणाली और माप की इकाइयाँ	4	0	-	4	20	20	60	100
SUHP -MDM-231	भारतीय दर्शन परम्पराः सामान्य परिचय	4	0	-	4	20	20	60	100
SUHP -SEC-231	योगशास्त्र	4	0	-	4	20	20	60	100

ME – Mid Exam, IA- Internal Assessment, ESE- End Sem. Exam

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

अधिष्ठाता/DEAN
गणितीय एवं भौतिक विज्ञान अध्ययनशाला
School of Mathematical & Physical Science
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar

Semester I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
SUHP-DSM-131	वैदिक साहित्य परिचय I	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य – (**Objectives**):

(1) – वैदिक साहित्य का विशद परिचय

(2) – वैदिक साहित्य के घटकों यथा संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् का परिचय

(3) – वेदांग का परिचय

(4) – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छंद एवं ज्योतिष का महत्व

(5) – ऋग्वेद का मंडल क्रम एवं अष्टक क्रम विभाग

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1) - इकाई–1 के अध्ययन से वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त होगा।

(UO-2) - इकाई–2 के अध्ययन से वैदिक साहित्य के घटकों का विशेष परिचय प्राप्त होगा।

(UO-3) - इकाई–3 के अध्ययन से वेदांग साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त होगा।

(UO-4) - इकाई–4 के अध्ययन से वेदाङ्ग साहित्य के घटकों शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छंद एवं ज्योतिष का परिचय प्राप्त होगा।

(UO-5) - इकाई–5 के अध्ययन से ऋग्वेद के विभाजन विषयक प्राप्त होगा।

इकाई–1	वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय, वेदों का अपौरूषेयत्व, वेदों की सार्वभौमिकता एवं सार्वकालिकता
इकाई–2	वैदिक साहित्य के घटक, संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद्, प्रत्येक संहिता से संबंधित ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् का परिचय
इकाई–3	वेदांग साहित्य का सामान्य परिचय
इकाई–4	वेदांग साहित्य के अन्तर्गत शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छंद एवं ज्योतिष की वेद के साथ अंग अंगी संबंध एवं परिचय
इकाई–5	ऋग्वेद की संरचना, विभाजन, सूक्त संख्या, मंत्र संख्या, अष्टक कम एवं मंडल कम विभाजन का वर्णन।

संदर्भ / सहायक ग्रंथ

1– संस्कृत साहित्य का इतिहास, लेखक श्री उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखंभा प्रकाशन

2– वैदिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय

DShukla 20/2/25 Shivani 20/02/2025 27/2/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional	ESE	Total	Course Code
SUHP-DSM-132	Vedic Mathematics	4	0	-	4	20	20	60	100

उद्देश्य – **(Objectives):**

(1) वैदिक गणित की मूलभूत संकल्पनाओं और उनके महत्व को समझना।

(2) वैदिक गणित के सूत्रों और उनकी गणनाओं में उपयोगिता को सीखना।

(3) गुणा, भाग, वर्गमूल, घनमूल और पुनरावर्ती दशमलव (RD) संख्याओं की वैदिक विधियों को समझना।

(4) बीजगणितीय संक्रियाओं, चर–अभिव्यक्तियों, गुणनखंडन, एलसीएम/एचसीएफ, और विभाजन एल्गोरिदम का अध्ययन करना।

(5) ज्यामिति में बौधायन त्रिकों (Baudhayana Triads) और त्रिकोणमिति, निर्देशांक ज्यामिति, तथा सम्मिश्र संख्याओं में उनके अनुप्रयोगों को समझना।

इकाईशः शिक्षण अधिगम – **(Unit wise learning outcomes)**

(UO-1) वैदिक गणित की अवधारणा, उसकी उपयोगिता और वैदिक गणितीय सूत्रों के विभिन्न प्रकारों को समझना। विन्कुलम (Vinculum) की प्रक्रिया, इसके अनुप्रयोगों और संक्रियाओं (जैसे रूपांतरण, जोड़, घटाव) को सीखना।
(UO-2) वैदिक गुणा पद्धति (ऊर्ध्वतिर्यग्भ्याम्, आधार संख्या विधि) और विभिन्न उत्पादों के योग व अंतर की गणना को समझना। विभाजन पद्धति (निखिलम् और परावर्त्य योजयेत्) के प्रयोगों का विश्लेषण करना।
(UO-3) मेरु–प्रस्तार की अवधारणा, वर्ग, घन, वर्गमूल और घनमूल की गणना में वैदिक विधियों का उपयोग समझना। विभाज्यता (Osculator & Vestanam) तथा पुनरावर्ती दशमलव संख्याओं की गणना को सीखना।
(UO-4) बीजगणितीय संक्रियाओं में वैदिक गुणा (Quadratic, Cubic अभिव्यक्तियों पर ऊर्ध्वतिर्यग्भ्याम् विधि), विभाजन एल्गोरिदम (Paravartya Yojayet) और विस्तारण (Meru-Prastar, पाँचवीं घात तक) की प्रक्रियाओं को समझना। गुणनखंडन, एलसीएम/एचसीएफ की अवधारणाओं को सीखना।
(UO-5) ज्यामिति में बौधायन त्रिकों (BT) की अवधारणा को समझना और उनके त्रिकोणमिति, निर्देशांक ज्यामिति (2D, विभिन्न रेखा परिस्थितियों) तथा समिश्र संख्याओं (गुणा, भाग, वर्गमूल) में अनुप्रयोगों का अध्ययन करना।

इकाई–1	वैदिक गणित का सामान्य परिचय एवं महत्व, वैदिक गणित के सूत्रों का परिचय एवं उदाहरण, विंकुलम– परिचय, रूपांतरण, अनुप्रयोग, जोड़ और घटाव, बीजांक
इकाई–2	गुणन– परिचय – लंबवत और क्रॉसवाइज, आधार संख्या/उप आधार संख्या, उत्पादों का योग और अंतर विभाजन– परिचय – निखिलम, परावर्त्ययोजयते।
इकाई–3	मेरु–प्रस्तर, वर्ग, घन, वर्गमूल और घनमूल, विभाज्यता– परिचय – ऑस्कुलेटर (वेस्तानम), आवर्ती दशमलव–परिचय – 1,3,7,9 पर समाप्त होने वाला हर
इकाई–4	बीजगणित– परिचय गुणन (1 या 2 चरों के द्विघात और घन व्यंजक)– परिचय – लंबवत और क्रॉसवाइज, उत्पादों का योग और अंतर। विभाजन एल्गोरिथ्म और अनुप्रयोग (1 चर और 3 तक की डिग्री के भाजक की अभिव्यक्तियाँ)– परिचय – परावर्त्ययोजयते, मिश्रित संक्रियाएँ विस्तार– परिचय – मेरुप्रस्तर– पाँचवीं घात तक, मिश्रित संक्रियाएँ गुणनखंडन (घन व्यंजक), लघुत्तम समापवर्त्य, महत्तम समापवर्तक
इकाई–5	ज्यामिति– परिचय बौधायन त्रिक (BT) की अवधारणा, BT का अनुप्रयोग –त्रिकोणमिति, निर्देशांक ज्यामिति, (2D), केवल रेखा के विभिन्न मामले), जटिल संख्याएँ, (गुणन, भाग और वर्गमूल)

संदर्भ/सहायक ग्रंथ

1. भारतीय कृष्ण तीर्थरू वैदिक गणित (मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली, 2001)।
2. वी.जी. हीरुररू भारत के गणित का इतिहास और गणितज्ञ।
3. वी.जी. उंकलकररू गणित की जादुई दुनिया, (वंदना पब्लिशर्स बैंगलोर, 2008)।
4. डॉ. व्यवहारे–चौथईवाले–बोरगांवकररू वैदिक गणित का परिचय।

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
SUHP-DSM-133	भारतीय आयुर्वेद	4	2	-	6	20	20	60	100

उद्देश्य –**(Objectives)**

(1) – आयुर्वेद संबंधी ज्ञान

(2) – आयुर्वेद के विविध आयामों का विस्तृत अध्ययन

(3) – आयुर्वेद की क्रियाओं व उपयोगिता का अध्ययन

(4) – दिनचर्या एवं आहार–बिहार में आयुर्वेद का अनुकरण।

(5) – आयुर्वेद की वर्तमान समय में उपयोगिता का अध्ययन।

इकाईशः शिक्षण अधिगम –**(Unit wise learning outcomes)**

(UO-1) – इकाई–1 के अध्ययन से छात्रों को आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-2) – इकाई–2 के अध्ययन से छात्र आयुर्वेद के विविध आचार्यों के बारे में जानेंगे।

(UO-3) – इकाई–3 के अध्ययन से छात्र आयुर्वेद के विभिन्न आयामों का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-4) – इकाई–4 के अध्ययन से छात्र दैनिक जीवन एवं स्वास्थ्य पर आयुर्वेद के गुणों का अध्ययन करेंगे।

(UO-5) – आयुर्वेद की वर्तमान समय में भूमिका को जानकर शोध कार्य एवं जागरूकता बढ़ेगी।

Unit – I – आयुर्वेद का सामान्य परिचय
Unit – II – आयुर्वेद के विविध आचार्यों का परिचय
Unit – III – महाभूत, त्रिदोष, धातु, त्रिमल, त्रयोदशाग्नि, स्वस्थ का लक्षण
Unit – IV – दिनचर्या, ऋतुचर्या एवं आहार–विहार
Unit – V – आयुर्वेद की वर्तमान प्रसंगिकता

संदर्भ / सहायक ग्रंथ

1. डॉ. सुषमा राणा, पुस्तक नाम– आयुर्वेद – परिचय एवं आधारभूत सिद्धांत, प्रकाशन – विद्यानिधि प्रकाशन नई दिल्ली

DShukla 20/2/25

Shivani Khare 20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
SUHP-MDM-131	वैदिक विज्ञान	4	2	-	6	20	20	60	100

उद्देश्य–(Objectives)

(I) – भारतीय शास्त्रों में प्राप्त वैज्ञानिक विषयों का ज्ञान।

(II) – परमाणु सम्बन्धी अवधारणाओं का ज्ञान एवं आचार्य कणाद के परमाणु मॉडल का ज्ञान

(III) – प्राचीन काल में ध्वनि एवं दृष्टि विज्ञान सम्बंधी अवधारणाओं का अध्ययन।

(IV) – संस्कृत साहित्य में उपलब्ध विविध ऋषियों एवं आचार्यों के वैज्ञानिक योगदान की जानकारी।

इकाईशः शिक्षण अधिगम – **(Unit wise learning outcomes)**

(UO-1) – इस प्रश्न पत्र के अध्ययन से छात्र प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक चिंतन के विषय में जानेंगे।

(UO-2) – सृष्टि की उत्पत्ति विषयक ऊर्जा एवं परमाणु संबंधी अवधारणाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

(UO-3) – ध्वनि विज्ञान एवं राष्ट्रीय विज्ञान की प्राचीनतम एवं आधुनिक दोनों प्रकार की अवधारणा की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

(UO-4) – संस्कृत साहित्य एवं आधुनिक विज्ञान के परस्पर संबंधों के ज्ञान को समझ सकेंगे।

Unit – I – वैदिक विज्ञान का सामान्य परिचय
Unit – II – परमाणु सम्बन्धी अवधारणायें, कपिल मुनि के 25 तत्व सांख्य दर्शन
Unit – III – वेदो में रसायन, वेदों में भौतिकी प्राचीन एवं आधुनिक अवधारणाएं
Unit – IV – मेरू प्रस्तार, बोधायन प्रमेय

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional	ESE	Total	Course Code
SUHP-AEC-131	भारतीय खगोल विज्ञान	4	2	-	6	20	20	60	100

Course Objectives:

(1) छात्रों को समय के पारंपरिक भारतीय मापों और वैदिक परंपरा में उनके महत्व से परिचित कराना।
(2) छात्रों को विभिन्न भारतीय कैलेंडर प्रणालियों और उनकी गणना विधियों से परिचित कराना।
(3) शास्त्रीय सिद्धांतिक, करण और वाक्य ग्रंथों से ग्रहों की स्थिति की गणना का पता लगाना।
(4) आर्यभट्ट से नीलकंठ तक ग्रह मॉडल के विकास को समझना।
(5) ग्रहों के देशांतर और अयनांश निर्धारित करने के लिए एल्गोरिदम लागू करना।

Learning Outcomes:

UO1: वेदों में समय के विभाजन को समझें, जिसमें वर्ष, महीने और दिन की अवधारणाएँ शामिल हैं, साथ ही तैत्तिरीय–ब्राह्मण जैसे ग्रंथों में उनके नाम और महत्व भी शामिल हैं।

UO2: सामान्य समय माप, समय की गणना के तरीके और विभिन्न युगों के रूपांतरण का विश्लेषण करें, जैसे शक से कलि और विक्रम–संवत से कलि।

UO3: भारतीय कैलेंडर के पांच तत्वों (पंचांग) की व्याख्या करें, जिसमें नक्षत्र, तिथि, योग, करण और वार शामिल हैं, और कैलेंडर गणनाओं में उनकी भूमिका।

UO4: आर्यभटीय जैसे सिद्धान्तिक ग्रंथों का उपयोग करके ग्रहों की स्थिति की गणना करें, और सही देशांतर और अयनांश निर्धारित करने के तरीकों को समझें।

UO5: चंद्रवाक्य और त्रुटि–सुधार प्रक्रियाओं सहित ग्रहों की गणना के लिए करण और वाक्य ग्रंथों से सरलीकृत एल्गोरिदम लागू करें, और भारतीय खगोल विज्ञान में उनके महत्व की व्याख्या करें।

इकाई –1	समय के माप– वेद में समय के विभाजन– वर्ष, महीने और दिन, तैत्तिरीय–ब्राह्मण में 13 महीनों के नाम। 12 अर्ध–महीनों के नाम, 354 दिनों का चंद्र वर्ष, महीने और अंतराल महीने।
इकाई –2	सामान्य समय माप, समय की गणना के तरीके, चंद्र दिवस, सौर दिवस, सौर वर्ष, चंद्र–सौर वर्ष, नागरिक दिवस। युगों का रूपांतरण– शक से कलि, शक से जोवियन वर्ष, विक्रम–संवत से कलि, कोल्लम वर्ष से कलि।
इकाई –3	भारतीय कैलेंडर प्रणाली– पंचांग– कैलेंडर के पांच तत्व, गणनाएँ नक्षत्र, तिथि, योग, करण और वार। सूर्य का नक्षत्र, सौर कैलेंडर, विक्रम–संवत और शालिवाहन–संवत – राष्ट्रीय कैलेंडर (राष्ट्रीय दिनदर्शिका)।
इकाई –4	सिद्धान्तिक ग्रंथों (आर्यभटीय) से ग्रहों की स्थिति– आहारगण की गणना, महायुग में ग्रहों की परिक्रमा संख्या, ग्रहों का औसत देशांतर ज्ञात करना, मंदसंस्कार, शिघ्रसंस्कार, ग्रहों का वास्तविक देशांतर। आर्यभट्ट से नीलकंठ तक ग्रह मॉडल का विकास (अर्ध–सूर्यकेंद्रित मॉडल)। अयनांश निर्धारण के लिए विभिन्न एल्गोरिदम
इकाई –5	करण और वाक्य ग्रंथों से ग्रहों की स्थिति– करणकुतुहल, ग्रहलाघव आदि करण ग्रंथों में दिए गए सरलीकृत एल्गोरिदम में ग्रहों की स्थिति प्राप्त करना। वररुचि और माधव के चंद्रवाक्य और उनके लिए त्रुटि–सुधार प्रक्रिया। वाक्य प्रणाली का उपयोग करके सूर्य और चंद्रमा के देशांतर प्राप्त करना। मासवाक्य, संक्रांति–वाक्य और नक्षत्र–वाक्य का महत्व।

संदर्भ/सहायक ग्रंथ

1. एस.एन. सेन और के.एस. शुक्ला, भारत में खगोल विज्ञान का इतिहास, दूसरा संस्करण, आईएनएसए, दिल्ली, 2001
2. एस. बालचंद्र राव, इंडियन एस्ट्रोनॉमी एन इंट्रोडक्शन, यूनिवर्सिटीज़ प्रेस, हैदराबाद, 2000
3. खगोल विज्ञान का इतिहासरू एक पुस्तिका, के. रामासुब्रमण्यम, अनिकेत सुले और मयंक वाहिया, एस और एचआई, आईआईटी बॉम्बे और टीआईएफआर द्वारा संपादित। मुंबई, 2016.
4. बी.वी. सुब्बारायप्पा और के.वी. सरमा, भारतीय खगोल विज्ञानरू एक स्रोत पुस्तक, नेहरू सेंटर, बॉम्बे, 1985. 5. नीलकंठ सोमयाजी का तंत्रसंग्रह, अनुवाद और नोट्स, के. रामसुब्रमण्यन और 6. एम. एस. श्रीराम, हिंदुस्तान बुक एजेंसी, नई दिल्ली 2011 7. एम. एस. श्रीराम, भारतीय खगोल विज्ञान के तत्व– 5 व्याख्यान, भारतीय विज्ञान पर निर्देशात्मक पाठ्यक्रम, प्रो. के.वी. सरमा रिसर्च फाउंडेशन, 2019।
8. आर्यभट्ट का आर्यभटीय, अनुवाद और नोट्स के साथ संपादित, के.एस. शुक्ला और के.वी. सरमा, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली, नई दिल्ली, 1976।
9. पुतुमना सोमयाजी की करणपद्धति, अनुवाद और नोट्स, आर. वेंकटेश्वर पाई, के. रामसुब्रमण्यम, एम.एस. श्रीराम और एम. डी. श्रीनिवास, हिंदुस्तान बुक एजेंसी, नई दिल्ली और स्प्रिंगर, 2018

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
SUHP-DSM-231	वैदिक साहित्य का परिचय II	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य – (Objectives):

(1) – वैदिक सूक्तों एवं संवादों का परिचय कराते हुए वैदिक साहित्य के महत्व का प्रतिपादन करना।

(2) – वैदिक सूक्त – अग्नि, इन्द्र, उषा के चयनित मंत्रों का अनुवाद एवं आधुनिक संदर्भ में इनका महत्व समझना।

(3) – वैदिक सूक्त – शिवसंकल्प सूक्त का मनोवैज्ञानिक महत्व स्पष्ट करना।

(4) – वैदिक सूक्त – सांमनस्यम् सूक्त का पारिवारिक महत्व समझाना।

(5) – वैदिक सूक्त – नासदीय, पर्यावरण सूक्त के अध्ययन से सृष्टि उत्पत्ति एवं पर्यावरण चेतना के प्रति जागरूकता।

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1) - इकाई–1 के अध्ययन से वैदिक सूक्तों एवं संवाद सूक्तों का सामान्य परिचय प्राप्त होगा।

(UO-2) - इकाई–2 के अध्ययन से अग्नि, इन्द्र एवं उषा सूक्त के चयनित मंत्रों का परिचय प्राप्त होगा।

(UO-3) - इकाई–3 के अध्ययन से शिवसंकल्प सूक्त का मनोवैज्ञानिक महत्व एवं मन की शक्ति का परिचय प्राप्त होगा।

(UO-4) - इकाई–4 के अध्ययन से सांमनस्यम् सूक्त के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक, पारिवारिक एवं राष्ट्रीय एकता के सूत्रों का परिचय प्राप्त होगा।

(UO-5) – इकाई–5 के अध्ययन से सृष्टि उत्पत्ति विषयक वैदिक विमर्श एवं पर्यावरण चेतना विषयक परिचय प्राप्त होगा।

इकाई –1	वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय, सूक्तों एवं संवाद सूक्तों की परंपरा, का परिचय
इकाई –2	अग्नि, इन्द्र, उषा सूक्तों का परिचय एवं मंत्रशः अध्ययन
इकाई –3	शिवसंकल्प सूक्त, मंत्र अध्ययन, मन की शक्ति एवं मन का महत्व
इकाई –4	सांमनस्यम् सूक्त, मंत्र अध्ययन, सामाजिक एकता एवं पारिवारिक एकता के सूत्रों का प्रतिपादन
इकाई –5	नासदीय सूक्त एवं पर्यावरण सूक्त – मंत्र अध्ययन, सृष्टि उत्पत्ति विषयक विमर्श, पर्यावरण चेतना विषयक विमर्श

संदर्भ / सहायक ग्रंथ

1– संस्कृत साहित्य का इतिहास, लेखक श्री उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखंभा प्रकाशन

2– वैदिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय

DShukla 20/02/25 Shivani Khare 20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

20/2/25

Semester II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
SUHP-DSM-232	प्राचीन भारतीय गणित	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य (Objectives):

(1) - भारतीय गणित परम्परा के महत्व का ज्ञान
(2) - आर्यभट्ट एवं भास्कराचार्य का भारतीय गणित को योगदान का ज्ञान

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

UO-1 – वैदिक साहित्य में वर्णित ज्यामिति एवं बोधायन प्रमेय का ज्ञान।
UO-2 – आर्यभट्ट विरचित आर्यभटीयम ग्रंथ का अध्याय क्रम संयोजन एवं अंकगणित के उपयोग का अध्ययन।
UO-3 – भास्कराचार्य कृत लीलावती का परिचय एवं लीलावती में वर्णित गुणन की विधियों का ज्ञान।
UO-4 – परिधि–व्यास के अनुपात पर भारतीय गणितज्ञों का योगदान एवं पाई (π) नामकरण के विषय में अध्ययन।
UO-5 – भारतीय गणित परम्परा का ज्ञान।

Unit - I	शुल्वसूत्रों में वर्णित ज्यामिति, बोधायन–पाइथागोरस प्रमेय
Unit - II	आर्यभटीयम सामान्य परिचय एवं आर्यभटीयम में अंकगणित का परिचय
Unit - III	लीलावती का परिचय लीलावती में गुणन की विविध विधियॉं का परिचय
Unit - IV	π(पाई) का अविष्कार एवं भारतीय योगदान (परिधि–व्यास अनुपात)
Unit - V	गणित को भारतीय विद्वानों का योगदान

Reference/Text Book.

1– चार शुल्वसूत्र, डॉ. रघुनाथ पुरूषोत्तम कुलकर्णी, महर्षि संदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान।
2– आर्यभटीयम, आचार्य आर्यभट्ट, चौखम्भा प्रकाशन, बाराणसी।
3– लीलावती, पं. सीताराम शुक्ल, मोतीलाल बनारसी दास।

D Shukla
20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
SUHP-DSM-233	भारतीय संख्या प्रणाली और माप की इकाइयाँ	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य (Objectives):

(1) - भारत में संख्या प्रणालियों के ऐतिहासिक विकास और दशमलव स्थान मान प्रणाली की अवधारणा को समझना।

(2) – भारतीय गणित की विशिष्ट विशेषताओं और उसके प्रमुख योगदानों का अध्ययन करना।

(3) - अंकगणित की विभिन्न भारतीय प्रणालियों जैसे आर्यभट्ट, भूतसंख्या और कटपयादि पद्धति को समझना और उनकी तुलना करना।

(4) - प्राचीन भारतीय मापन प्रणालियों, जैसे समय, दूरी और वजन मापन के लिए प्रयुक्त विधियों का अध्ययन करना।

(5) - पिंगला और बाइनरी प्रणाली के बीच संबंध को समझना और इनके गणितीय अनुप्रयोगों का विश्लेषण करना।

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

UO-1 – भारत में संख्या प्रणालियों के ऐतिहासिक प्रमाणों का विश्लेषण करना, दशमलव स्थान मान प्रणाली की अवधारणा को समझना, और पारंपरिक साहित्य में बडी संख्याओं की गणना के तरीकों को सीखना।

UO-2 – भारतीय गणित के मुख्य पहलुओं को पहचानना और उनके ऐतिहासिक एवं आधुनिक योगदानों का मूल्यांकन करना।

UO-3 – आर्यभट्ट, भूतसंख्या और कटपयादि प्रणालियों की अवधारणाओं, उनके गणनात्मक दृष्टिकोणों और आपसी अंतरों को समझना।

UO-4 – प्राचीन भारतीय मापन प्रणालियों के सिद्धांतों को समझना और समय, दूरी तथा वजन मापन की परंपरागत विधियों का विश्लेषण करना।

UO-5 – पंगला और बाइनरी प्रणाली के गणितीय सिद्धांतों को समझना, और इनका विभिन्न गणितीय तथा कंप्यूटिंग अनुप्रयोगों में उपयोग करना।

इकाई –1	भारत में संख्या प्रणाली – ऐतिहासिक साक्ष्य, दशमलव स्थान मान प्रणालीरू वेदों में संख्याएँ, पारंपरिक साहित्य से बड़ी संख्याओं (कोटि से महा–औघ, अक्षौहिणी और अन्य नामित अंक) की गणना।
इकाई –2	भारतीय गणित के मुख्य पहलू
इकाई –3	अंकगणित की तीन अलग–अलग प्रणालियाँरू आर्यभट्ट, भूतसंख्या और कटपयादि प्रणालियाँ
इकाई –4	समय, दूरी और वजन के लिए माप
इकाई –5	पिंगला और बाइनरी प्रणाली

संदर्भ/सहायक ग्रंथ

1– लीलावती, पं. सीताराम शुक्ल, मोतीलाल बनारसी दास।

2– बी. दत्ता और ए. एन. सिंह, हिंदू गणित का इतिहास, 2 भाग, पुनर्मुद्रण, भारतीय कला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004।

3– ए. के. बाग, प्राचीन और मध्यकालीन भारत में गणित, चौखंबा, वाराणसी, 1979 ।

4– सी. एन. श्रीनिवास अयंगर, भारतीय गणित का इतिहास, वर्ल्ड प्रेस, कलकत्ता, 1967 ।

DShukla 20/2/25

20/02/2025

20/2/24

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

20/2/25

Semester II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
SUHP-MDM-231	भारतीय दर्शन परम्पराः सामान्य परिचय	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य (Objectives):

(1) - दर्शन की अवधारणा का सामान्य अध्ययन
(2) - भारतीय दर्शनों का वर्गीकरण
(3) - भारतीय दर्शन परम्परा के विविध मतों का सामान्य परिचय
(4) - तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा एवं आचार मीमांसा का अध्ययन

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

UO-1 - इकाई–1 के अन्तर्गत दर्शन की अवधारणा का अध्ययन एवं आस्तिक, नास्तिक दर्शनों के वर्गीकरण की समझ।
UO-2 - नास्तिक दर्शनों का सामान्य परिचय (चार्वाक, जैन एवं बौद्ध)।
UO-3 - आस्तिक दर्शन के अन्तर्गत न्याय – वैशेषिक दर्शन की तत्व, ज्ञान एवं आचार मीमांसा का ज्ञान।
UO-4 - सांख्य–योग दर्शन की तत्व, ज्ञान एवं आचार मीमांसा का ज्ञान।
UO-5 - पूर्व मीमांसा उत्तर मीमांसा दर्शन की तत्व ज्ञान एवं आचार मीमांसा।

Unit - I	दर्शन शब्द परिचयः व्युत्पत्ति एवं वर्गीकरण
Unit - II	चार्वाक, जैन एवं बौद्ध दर्शन का सामान्य परिचय
Unit - III	न्याय–वैशेषिक दर्शन का सामान्य परिचय
Unit - IV	सांख्य–योग दर्शन का सामान्य परिचय
Unit - V	पूर्व मीमांसा एवं उत्तर मीमांसा दर्शन का सामान्य परिचय

Reference/Text Book.

1– Introduction to Indian Philosophy, Dutta and Chaterjee.
2– 'भारतीय दर्शन', आचार्य चन्द्रधर शर्मा।

DShukla 20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Semester II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
SUHP-SEC-231	योगशास्त्र	2	0	-	2	20	20	60	100

उद्देश्य–(Objectives)

(I) पातंजल योगसूत्र (1–10) सूत्र का अध्ययन करना।

(II) पातंजल योगसूत्र (11–20) सूत्र का अध्ययन करना।

(III) अष्टांग योग की चर्चा।

(IV) गीता में योग की भूमिका की जानकारी प्राप्त करना।

(V) महर्षि पतंजलि के योगदान की जानकारी।

इकाईशः शिक्षण अधिगम –**(Unit wise learning outcomes)**

(UO-1) – पातंजल योग सूत्र (1–10) सूत्रों का व्यावहारिक ज्ञान के रूप में प्रयोग करना।

(UO-2) – पातंजल योग सूत्र (11–20) का ज्ञान अष्टांग योग की चर्चा करना।

(UO-3) – गीता में योग की महत्ता को समझना

(UO-4) – महर्षि पतंजलि के जीवन का ज्ञान प्राप्त करना।

(UO-5) – महर्षि पतंजलि के योगदान की जानकारी प्राप्त करना।

Unit – I – पातंजल योगसूत्र, (1–10) सूत्र समाधिपाद
Unit – II – पातंजल योगसूत्र, (11–20) सूत्र समाधिपाद
Unit – III – अष्टाङ्ग योग
Unit – IV – गीता में योग विषयक अवधारणा
Unit – V – योग के विषय में महर्षि पतंजलि के अन्य विचार

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

School Board Meeting held on 25 February, 2025

The School Board has approved the minute of meeting of BOS of Department of Vedic Studies held on 20/02/2025.

Appeared online

Prof. A.K. Saxena
External Member
Department of Mathematics, Maharaja Chhatrasal University, Chhatarpur (M.P.)

online

Prof. K.S. Varsney
External Member
HoD Physics, D.S. College, Aligarh, U.P.

online

Prof. Narendra Pandey
External Member
Department of Physics,
University of Lucknow (U.P.)

Prof. Diwakar Shukla
Member
Department of Mathematics & Statistics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Prof. Ashish Verma
Member
HoD, Department of Physics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Prof. Ranveer Kumar
Member
HoD, Department of Physics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Prof. U.K. Patil
Member
Department of Pharmaceutical Science,
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Prof. R.K. Rawat
Member
Department of Applied Geology,
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Dr. Rekha Garg Solanki
Member & Associate Professor
Department of Physics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Prof. U.K. Khedlekar
Member
Department of Mathematics & Statistics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Dr. Abhishek Bansal
Member & Associate Professor
HoD, Department of Computer Science & Applications
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Dr. Shivani Khare
Member & Assistant Professor
Department of Mathematics & Statistics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Dr. Mahesh Kumar Yadav
Member & Assistant Professor
Department of Mathematics & Statistics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Mr. Kamal Kant Ahirwar
Member
Department of Computer Science & Applications
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Dr. Maheshwar Panda
Member & Assistant Professor
Department of Physics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Prof. R.K. Gangele
Chairman, School Board & Dean, SMPS
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

गणितीय एवं भौतिक विज्ञान अध्ययनशाला
School of Mathematical & Physical Science
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar